International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Sep- Oct- 2018, Volume-5, Issue-5
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

भारतीय सस्कृति में प्रमुख सोलह संस्कार

डॉ. कृष्णा गौड़

ऐसोसिऐट प्रोफेसर सस्कृत

संस्कार वह क्रिया है जिसके करने से कोई व्यक्ति किसी कार्य के लिए योग्य हो जाता है।

किसी पदार्थ विषेष में योग्यता धारण कराने वाली जिस क्रिया से कोई कार्य हो जावे वे क्रियायें ही संस्कार है।

गौतम सुत्र में अडतालिस संस्कारों का उल्लेख किया गया है किन्तु सामान्यत सौलह संस्कारों का पालन करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य माना गया है।

मनु ने सौलह संस्कार षरीर की षुद्धी करने एवं आत्मा के विकास हेतु आवष्यक माने है।

मनुष्य जीवन गर्भाधान से प्रारम्भ होता है और षमषान में अन्त होता है। मनुस्मृति में संस्कार युक्त मानव को षास्त्रों के अध्ययन का अधिकारी माना गया है।

संस्कार :–

संस्कार ष्षब्द का निर्माण सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु में घञ् प्रत्यय लगाकर सुट् का आगम करने पर हुआ है। जिसका अर्थ है परिष्करण या परिमार्जन ।

प्रसिद्ध सौलह संस्कारों में कुछ प्राग्जन्म संस्कार है कुछ बाल्यावस्था के बालक की षिक्षा से सम्बन्धित है। संस्कारों का विवरण निम्न प्रकार है :–

1. **गर्भाधान** – संस्कारों में सर्वप्रथम यही संस्कार मान्य है। स्वस्थ एवं विवाह योग्य युवक – युवति विवाह बंधन में बध कर जब एक दुसरे के सम्पर्क में आते है तब ही ग्रर्भाधान का समय आता है। धर्मसूत्रकारों ने गर्भाधान के पूर्व दम्पत्ति के लिए उचित काल व आवष्यक धार्मिक कृत्यों का उल्लेख किया है। ष्षुभ मुर्हत में यज्ञ आदि कार्यो से निवृत होकर दैनिक पंचमहायज्ञों को सम्पादित करके स्वस्थ व प्रसन्नतापूर्ण चित से किये जाने वाले ग्रर्भाधान को श्रेष्ठ माना गया है। यह संस्कार मनुष्य के पृथ्वी पर आगमन का सूचक है। इसका उद्देष्य पितृ ऋण से मुक्ति , सृष्टि का विकास तथा वंषवुद्धी है।
2. **पुंसवन** – जब गर्भस्थ षिषु हलचल युक्त हो उससे से पूर्व पुंसवन संस्कार किया जाता है । इस अवसर पर दम्पति ईष्वर से क्षेष्ठ गुणों से युक्त पुत्र की याचना करते हैं । गर्भिणी स्त्री को वटवृक्ष की जटा सुंघाई जाती है तथा उसके आचार विचार एवं व्यवहार पर विषेष ध्यान दिया जाता है। उक्त स्त्री को धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन एवं मनोनुकूल दृष्यों को देखने हेतु प्रेरित किया जाता है।
3. **सीमान्तोन्नयन** – महर्षि याज्ञवल्क्य के अनुसार गर्भ से छटे अथवा आठवें महिने में सीमन्तोन्नयन संस्कार किया जाता हैं। यह संस्कार ष्षुक्लपक्ष में चन्द्रमा की श्रेष्ठ गति को देख कर किया जाता

हैं । पति अपनी पत्नी का श्रृंगार करके उसके बालों में कंघी करके उसकी मॉग भरता है। इसका उद्देष्य स्त्री को मानसिक व आत्मिक तृष्टि प्रदान करना है। तथा इससें षिषु भी प्रसन्नचित होता है। परिवार की वृद्ध स्त्रियां गर्भवती को वीर संतान होने का आर्षिवाद देती है।

4. **जातकर्म** – माता के गर्भ से बाहर आने पर नाल छेदन से पूर्व ही यह संस्कार किया जाता हैं इस समय षिषु का पिता स्वर्ण अथवा काष्ठ की दण्डिका में चन्दन लगा कर उसकी जीभ पर ओम लिखता है। षिषु को ष्षहद और घी चठाया जाता है। तद् उपरान्त उसका ष्षौच एवं नालोच्छेद किया जाता है।
5. **नामकरण** – नाम से ही मनुष्य को कीर्ति एवं सम्मांन मिलता है। याज्ञवल्क्य के अनुसार जन्म से ग्यारहवें दिवस पर नामकरण किया जाता है।
6. **निष्क्रमण** – चार – माह के पश्चात् षिषु को घर से बहार निकाल कर दिन में सूर्य और रात्रि में चन्द्रामा के दर्षन करवाये जाते है। सूर्य ज्ञान विज्ञान का स्त्रोंत है। तथा सूर्य चन्द्रमा दोनों के दर्षन से इसके जीवन पर अनुकूल प्रभाव पडता है।
7. **अन्नप्राषन** – आष्वलायन सूत्र के अनुसार छटे मास में षिषु को घृतयुक्त चावल का भात, दधि, ष्षहद आदि खिलाया जाता है। आज कल जन्मों प्रान्त पहले नवरात्रें में चॉदी के सिक्के से बालक के मुह में खीर लगाई जाती है।
8. **चूड़ाकर्म** – इस संस्कार में पहली बार बालक के बाल मुण्डवायें जातें है। जिसे आज कल जडुला नाम से पुकारा जाता है।
9. **कर्णवेध** – इस संस्कार में बालक के पॉचवें वर्ष में और कही – कही बालक के तृतीय वर्ष में कर्ण छेदन किया जाता है। इससे रोगों से ष्षरीर की रक्षा तथा आभूष्ण धारण दोनों कार्य सम्पन्न होते है।
10. **उपनयन** – उपनयन ष्षब्द का अर्थ है समिप ले जाना । अर्थात वह संस्कार जिसके द्वारा बालक को षिक्षा के लिए गुरू के समिप ले जाया जाता है। इसे यज्ञोपवीत' संस्कार भी कहते है।
11. **विद्यारम्भ** – गुरू देवस्तुति के पश्चात् ब्रह्मचारी को गायत्री मंत्र का उपदेष देकर षिक्षा देना प्रारम्भ करता है। वेदाध्ययन के बिना कोई भी ब्रह्मचारी यज्ञ आदि कार्यो का अधिकारी नही होता।
12. **समार्वतन** – ब्रह्मचर्या आश्रम का प्रारम्भ उपनयन संस्कार से होता था इसी प्रकार उसकी समाप्ति समावर्तन से होती थी समार्वतन का अर्थ पुनः लोटना । गुरूकुल में रहकर सम्पूर्ण षिक्षा प्राप्त कर जिस समय वह अपने पितृकुल लौटता था उस समय यह संस्कार किया जाता था और उसे स्नातक की उपाधि दी जाती थी। वे विधार्थी गुरू को भी दक्षिणा देकर प्रसन्न करते थे।
13. **विवाह** – भारतीय संस्कुत में विवाह संस्कार प्रांचिन काल से प्रचलित है। धर्मग्रन्थों में विवाह को यज्ञ कहा गया है । मनुस्मृति के अनुसार गुरू की आज्ञा से सवर्णा ष्षुभलक्षणों से युक्त कन्या से विवाह करना चाहीऐं। वह कन्या माता और पिता के मूल गौत्र वाली न हो।
14. **वानप्रस्थ** – पुत्र के यहा पौत्र उत्पन्न होने के बाद गृहस्थ व्यक्ति घर का परित्याग करके वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेष करता है। इस अवसर पर किया जाने वाला संस्कार वानप्रस्थ संस्कार कहलाता है। वह ग्रहस्थी का भार पुत्रों पर छोडकर समाज का मार्ग निर्देषन करता हुआ वन में वास करता है। उसके साथ पत्नी भी जा सकती है। इस समय यज्ञ करना विद्यादान देना, अपने अनुभवों दुवारा समाज का निर्देषन व ईष्वर भक्ति में संलग्न रहना होता है।

15. **संन्यास** – 75 वर्ष की आयु में व्यक्ति संन्यास आश्रम मे प्रविष्ट होता है इस अवसर पर किया जाने वाला संस्कार संन्यास है इस में सभी प्रकार की इच्छाओं और कर्मों का परित्याग बताया गया है। व्यक्ति षिखा, केष, मूंछ आदि मुंडवा कर यज्ञोपवीत का परित्याग कर देता है। वह काषाय वस्त्र धारण कर , हाथ में दण्ड तथा भिक्षा पात्र लेकर पृथ्वी पर यत्र–तत्र विचरण करता है। इस स्थिति में उसे सुख दुख हानि लाभ जय पराजय मान अपमान आदि भाव कष्ट नही पहुचातें वह आत्मा के कल्याण मोक्ष के लिए प्रयत्नषील रहता है।
16. **अन्त्येष्टि** – यह व्यक्ति के जीवन का अंतिम संस्कार है अन्त्येष्टि पद का अर्थ अन्तिम इष्टि अर्थात् यज्ञ है। इसमें मृत देह को स्नान करा कर, नये सफेद वस्त्र पहनाकर अर्थी पर लिटाकर ष्मषान ले जाया जाता है और चिता पर रख दिया जाता है। और घर से लायी गयी अग्नि से जलाया जाता है यह वही अग्नि होती है जो विवाह में किये गये यज्ञ में मंत्रों द्वारा पवित्र की गई थी।

इस प्रकार ये संस्कार मानव व्यक्तित्व के लिए महत्वपूर्ण माने गये है।

संन्दर्भ ग्रन्थ –

क्रं . सं.	**नाम**	**लेखक**	**प्रकाषक**
1.	भारतीय संस्कृति के तत्व	डॉ. जे. सी. नारायणन्	नितिन प. अलवर
2.	याज्ञवल्क्यस्मृति	व्या. डॉ. श्रीकृष्ण ओझा	अभिषेक प. जयपुर
3.	चरक संहिता	आर्चाय चरक	चौ. सु. भा. वाराणसी
4.	भारतीय संस्कृति के तत्व	डॉ. श्रीकृष्ण ओझा	अभिषेक प. जयपुर